भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 4785

28 मार्च, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

'आयुष' स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के लिए आयुर्वेद दिवस

4785. श्री यदुवीर वाडियार:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने देश में समग्र स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए आयुर्वेद के ज्ञान को आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकृत करने के लिए कोई प्रयास शुरू किए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) आयुर्वेद दिवस के दौरान 'आयुष' स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों को सुदृढ़ करने और नागरिकों में स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई परियोजनाओं या कार्यक्रमों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) सरकार द्वारा पारंपरिक 'आयुष' पद्धतियों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ एकीकृत करने में अनुसंधान और नवाचार की सहायता करने के लिए की गई पहलों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) और (ग): आयुष मंत्रालय, समग्र स्वास्थ्य देखभाल सेवा प्रदान करने के लिए आयुर्वेद सहित आयुष चिकित्सा पद्धतियों को आधुनिक चिकित्सा के साथ एकीकृत करने की दिशा में कई पहल कर रहा है और साथ ही पारंपरिक आयुष पद्धतियों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ एकीकृत करने में अनुसंधान एवं नवाचार के लिए सहायता भी दे रहा है:

i. आयुष मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएच एंड एफडब्ल्यू) द्वारा स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस) के तहत स्थापित आयुष वर्टिकल, आयुष-विशिष्ट जन-स्वास्थ्य कार्यक्रमों की योजना, निगरानी और पर्यवेक्षण के लिए एक समर्पित संस्थागत तंत्र के रूप में कार्य करता है। यह वर्टिकल जन-स्वास्थ्य, स्वास्थ्य देखभाल, आयुष शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए रणनीति विकसित करने में दोनों मंत्रालयों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

ii. आयुष मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार के अस्पतालों में संयुक्त रूप से एकीकृत आयुष विभागों की स्थापना की है। इस पहल के हिस्से के रूप में, एकीकृत चिकित्सा विभाग की स्थापना की गई है और वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज तथा सफदरजंग अस्पताल एवं लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली में यह कार्य कर रहा है।

iii. एकीकृत चिकित्सा के विभिन्न मॉडलों के मौजूदा ज्ञान एवं प्रभावकारिता तथा बड़े पैमाने पर इसके लाभों का अध्ययन करने और व्यापक एकीकृत स्वास्थ्य नीति के ढांचे का प्रस्ताव लाने के लिए डॉ. वी. के. पॉल, माननीय सदस्य (स्वास्थ्य), नीति आयोग की अध्यक्षता में एक सलाहकार समिति का गठन किया गया था।

iv. भारत सरकार ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पीएचसी), सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों (सीएचसी) और जिला अस्पतालों (डीएच) में आयुष सुविधाओं की सह-स्थापना करने की कार्यनीति अपनाई है ताकि रोगियों को एक ही स्थान पर विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के विकल्प उपलब्ध हो सकें। आयुष चिकित्सकों/पैरामेडिक्स की नियुक्ति तथा उनके प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, जबकि आयुष बुनियादी ढांचे, उपकरण/फर्नीचर और औषधियों के लिए आयुष मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) के तहत साझा जिम्मेदारियों के रूप में सहायता दी जाती है।

v. भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम) ने आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध चिकित्सा पद्धति के लिए आयुष मॉड्यूल - इंटर्नशिप इलेक्टिव्स फॉर एमबीबीएस विकसित किया है। भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (स्नातक-पूर्व आयुर्वेद शिक्षा के न्यूनतम मानक) विनियम-2022 के विनियम 10 (7) के अनुसार, आयुर्वेद शिक्षण सामग्री के पाठ्यक्रम में आधुनिक प्रगति का अनुपात 40 प्रतिशत तक होगा।

vi. राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) के तहत होम्योपैथिक शिक्षा बोर्ड ने पारंपरिक आयुष पद्धतियों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ एकीकृत करने में अनुसंधान तथा नवाचार हेतु सहायता देने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

क. राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (होम्योपैथी में चिकित्सा अनुसंधान) विनियम, 2023 की राजपत्र अधिसूचना।

ख. बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी (बीएचएमएस) पाठ्यक्रम में सामुदायिक चिकित्सा विभाग के सहयोग से अनुसंधान विभाग की शुरुआत।

ग. एमडी (होम) पाठ्यक्रम में अलग से रिसर्च मैथडोलॉजी एंड बायोस्टैटिक्स विभाग की शुरुआत।

घ. होम्योपैथी स्नातकोत्तर छात्रों और संकायों के लिए नैदानिक अनुसंधान विधियों में ऑनलाइन प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

ङ. आयोग ने दिनांक 7.12.2022 को होम्योपैथी स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम-बी.एच.एम.एस. विनियम अधिसूचित किया है, जिसमें स्नातक स्तर पर फार्माकोलॉजी शुरू की गई है ताकि औषधियों की फार्माकोलॉजिकल प्रतिक्रिया के बारे में मेडिकल छात्रों को जानकारी दी जा सके।

च. होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज में प्रत्येक विभाग के लिए, विनियम में होम्योपैथी में आधुनिक प्रगति, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी शामिल करने (स्मार्ट-होम.) की पद्धति को शामिल किया गया है।

छ. प्रथम वर्ष बीएचएमएस के लिए एक अनिवार्य वैकल्पिक विषय रिकॉर्ड किया गया है और "ओरिएंटेशन ऑन डिफरेंट हैल्थ सिस्टम्स इन इंडिया" पर छात्रों के लिए लाइव किया गया है।

vii. आयुष मंत्रालय, 2021-22 से आयुर्ज्ञान नामक एक केंद्रीय क्षेत्र योजना कार्यान्वित कर रहा है जिसका उद्देश्य, आयुष के क्षेत्र में शैक्षणिक गतिविधियां, प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण, अनुसंधान तथा विकास गतिविधियां चलाकर आयुष में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार हेतु सहायता देना है। इस योजना के तीन घटक हैं- (i) आयुष में क्षमता निर्माण और सतत चिकित्सा शिक्षा; (ii) वित्तीय वर्ष 2021-22 से आयुष में अनुसंधान एवं नवाचार; (iii) वित्तीय वर्ष 2023-24 से आयुर्वेद जीव विज्ञान एकीकृत स्वास्थ्य अनुसंधान (एबीआईएचआर)। आयुष में अनुसंधान एवं नवाचार तथा एबीआईएचआर घटकों के तहत उन आयुष अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जो आयुष औषधियों और उपचारों के साक्ष्य-आधारित सत्यापन सृजित करने, आयुष उत्पादों की प्रभावकारिता, सुरक्षा, मानकीकरण तथा गुणवत्ता नियंत्रण, मौजूदा पारंपरिक उपचारों के साथ आयुष चिकित्सा पद्धति के एकीकरण, आयुष पद्धतियों में मौलिक अनुसंधान और आयुर्वेद जीव विज्ञान के सदृढ़ीकरण तथा विकास हेतु उच्च स्तरीय अनुसंधान, जिसमें मौलिक, औषधि विकास एवं नैदानिक अनुसंधान शामिल है, पर केंद्रित होती हैं।

viii. आयुष मंत्रालय 2021-22 से आयुर्स्वास्थ्य योजना के नाम से केंद्रीय क्षेत्र योजना को दो घटकों के साथ कार्यान्वित कर रहा है अर्थात (i) आयुष एवं जन-स्वास्थ्य (पीएचआई) घटक और (ii) सुविधाओं का उत्कृष्टता केंद्र में उन्नयन। उत्कृष्टता केंद्र घटक के तहत, ऐसे प्रतिष्ठित संगठनों के रचनात्मक तथा अभिनव प्रस्तावों में मदद करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जिनके पास सु-स्थापित भवन और बुनियादी ढांचा होता है और जो उत्कृष्टता केंद्र के स्तर तक आयुष पद्धतियों के लिए काम करने के इच्छुक होते हैं। आयुर्स्वास्थ्य योजना के उत्कृष्टता केन्द्र घटक के अंतर्गत, आधुनिक वैज्ञानिकों को शामिल करके आयुष में अंतः-अनुशासनात्मक अनुसंधान बढ़ाने के लिए कार्यकलाप आधारित/अनुसंधान आधारित उत्कृष्टता केन्द्र के तहत, राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कुल नौ संगठनों यथा टाटा मेमोरियल सेंटर (टीएमसी), मुंबई; केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई), लखनऊ; जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली; भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), दिल्ली; भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बैंगलुरु; एकीकृत चिकित्सा एवं अनुसंधान केंद्र (सीआईएमआर), एम्स, नई दिल्ली; नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज (एनआईएमएचएएनएस), बैंगलोर; यकृत एवं पित्त विज्ञान संस्थान (आईएलबीएस); भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), जोधपुर को वित्तपोषित किया गया है।

ix. आयुष चिकित्सा पद्धतियों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ एकीकृत करने के लिए आयुष मंत्रालय के तहत अनुसंधान परिषदों तथा राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा की गई पहलों का विवरण **संलग्नक** में दिया गया है।

(ख**):** 29 अक्टूबर 2024 को 9वें आयुर्वेद दिवस के अवसर पर**,** भारत के प्रधानमंत्री ने आयुष मंत्रालय की निम्नलिखित परियोजनाओं का शुभारंभ**,** उद्घाटन और शिलान्यास किया:

i. प्रधानमंत्री ने अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान**,** नई दिल्ली के दूसरे चरण का उद्घाटन किया। इस चरण के तहत, 258.73 करोड़ रुपये की कुल लागत की एक महत्वपूर्ण परियोजना में, 150 बिस्तरों वाला पंचकर्म अस्पताल**,** औषधि विनिर्माण के लिए एक आयुर्वेदिक फार्मेसी**,** एक स्पोर्ट्स मेडिसिन यूनिट**,** एक केंद्रीय पुस्तकालय**,** एक आईटी एवं स्टार्ट-अप केंद्र, 500 सीटों वाला सभागार तथा सामान्य और अंतर्राष्ट्रीय दोनों आगंतुकों के लिए गेस्ट हाउस जैसी प्रमुख विशेषताएं शामिल हैं।

ii. केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (सीआरआईवाईएन), खोरदा (ओडिशा) और केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (सीआरआईवाईएन), रायपुर (छत्तीसगढ़) की आधारशिला रखी गई।

iii. उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) आयुर्स्वास्थ्य योजना के तहत निम्नलिखित चार परियोजनाएं शुरू की गईं:

क. भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डायबिटीज एंड मेटाबोलिक डिसऑर्डर ने प्रीडायबिटीज और डायबिटीज अनुसंधान तथा आयुर्वेदिक फॉर्मूलेशन सत्यापन पर - ध्यान केंद्रित किया।

ख. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली स्थित सतत आयुष उत्कृष्टता केंद्र, उन्नत तकनीकी समाधान विकसित करने, स्टार्टरसौषधियों के लिए पूर्णतया अप में मदद देने और- स्थायी समाधान तैयार करने के लिए समर्पित रहा है।

ग. केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान लखनऊ स्थित सेंटर ऑफ एक्सिलेंस फॉर (सीडीआरआई) फंडामेंटलएंड ट्रांसलेशनल रिसर्च इन आयुर्वेद ने अश्वगंधा जैसी आयुर्वेदिक वनस्पतियों में उन्नत अनुसंधान पर केंद्रित किया है।

घ. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली स्थित सेंटर ऑफ एक्सिलेंस ऑन आयुर्वेद एंड सिस्टम्स मेडिसिन ने सिस्टम्स मेडिसिन का उपयोग करके रूमेटोइड गठिया के लिए आयुर्वेदिक उपचार के मॉलेक्यूलर मकैनिज्म पर शोध को अपना उद्देश्य बनाया।

iv. 'देश का प्रकृति परिक्षण अभियान' के नाम से एक राष्ट्रव्यापी अभियान का शुभारंभ किया गया जिसका उद्देश्य, आयुर्वेद में वर्णित 'प्रकृति' की अवधारणा के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करना और उनके स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए उनकी प्रकृति का आकलन करना था। यह आकलन छात्रों, शिक्षकों, आयुर्वेद चिकित्सकों तथा आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारियों सहित समर्पित स्वयंसेवकों की सहायता से एक समर्पित मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से किया गया था। मोबाइल ऐप वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद की (सीएसआईआर) द्वारा प्रदान किए (आईजीआईबी) इकाई इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी गए तर्क पर आधारित था। इस अभियान के तहत18 वर्ष और उससे अधिक आयु के कुल 1,39,62,239 भारतीय नागरिकों का प्रकृति मूल्यांकन किया गया है।

*****

संलग्नक

आयुष मंत्रालय द्वारा अपनी अनुसंधान परिषदों और राष्ट्रीय संस्थानों के माध्यम से की गई पहलों का विवरण

क्र. सं.	**अनुसंधान परिषदें/राष्ट्रीय संस्थान**	**पहलों का विवरण**
1	केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस)	केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस) ने अनुसंधान अध्ययन शुरू किए हैं जैसे ऑस्टियोआर्थराइटिस (घुटने) के प्रबंधन के लिए तृतीयक देखभाल अस्पताल (सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली) में आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ एकीकृत करने की व्यवहार्यता का संभावना का पता लगाने के लिए प्रचालनात्मक अध्ययन, हिमाचल प्रदेश में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (पीएचसी) स्तर पर राष्ट्रीय प्रजनन और बाल स्वास्थ्य सेवाओं में भारतीय चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद) शुरू करने की व्यवहार्यता, और कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग एवं स्ट्रोक की रोकथाम तथा नियंत्रण के राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीसीडीसीएस) में आयुष पद्धतियों का एकीकरण, तथा महाराष्ट्र के चयनित जिले (गढ़चिरौली) के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य (आरसीएच) में आयुर्वेद उपचार शुरू करने की व्यवहार्यता (प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल स्तर पर प्रसव पूर्व देखभाल (गर्भिणी परिचर्या) के लिए आयुर्वेदिक उपचार की प्रभावशीलता: एक बहु केंद्र परिचालन अध्ययन)। इसके अतिरिक्त, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) और सीसीआरएएस ने आईसीएमआर की बाह्य अनुसंधान योजना के अंतर्गत एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल पर ध्यान केन्द्रित करते हुए चिन्हित क्षेत्रों पर अनुसंधान करने के लिए एम्स में आयुष-आईसीएमआर एडवांस्ड सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव हेल्थ रिसर्च (एआई-एसीआईएचआर) स्थापित करने की पहल की है।
2	केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम)	केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम), आधुनिक शैक्षणिक/अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोगात्मक

		परियोजनाएं भी शुरू कर रही है। परिषद ने ऐलोपैथिक अस्पतालों यथा सफदरजंग अस्पताल, डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल, नई दिल्ली; जे.जे. अस्पताल, मुंबई आदि में सह-स्थापना केन्द्र भी स्थापित किए हैं। परिषद ने एकीकृत अनुसंधान करने के लिए विभिन्न शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक संगठनों के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं।
3	केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच)	केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (सीसीआरएच) एकीकृत चिकित्सा के क्षेत्र में सहयोग द्वारा अनुसंधान करके मुख्यधारा की स्वास्थ्य देखभाल सेवा के साथ होम्योपैथी के एकीकरण की दिशा में काम कर रही है। परिषद ने सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली; लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, नई दिल्ली; दिल्ली छावनी जनरल अस्पताल, नई दिल्ली; बीआरडी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में नैदानिक परीक्षण इकाई; सिविल अस्पताल, आइजोल, मिजोरम और जिला अस्पताल, दीमापुर, नागालैंड में विभिन्न नैदानिक स्थितियों में उपचार प्रदान करने के लिए एलोपैथिक अस्पताल में होम्योपैथी उपचार केन्द्र की सह-स्थापना की है। परिषद ने होम्योपैथी को मुख्यधारा की स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था के साथ जोड़ने की पहल की है जिसके तहत विभिन्न जन-स्वास्थ्य कार्यक्रम शुरू किए गए हैं जैसे होम्योपैथी के लिए एनपीसीडीसीएस कार्यक्रम का एकीकरण, स्वास्थ्य रक्षण कार्यक्रम (एसआरपी), 'स्वस्थ दांत निकलने के लिए होम्योपैथी' कार्यक्रम जो 'स्वस्थ बच्चे के लिए होम्योपैथी' का एक घटक है और अनुसूचित जाति घटक योजना (एससी घटक योजना)।
4	केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस)	केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद (सीसीआरएस) ने आधुनिक उपचारों के साथ-साथ आयुष उपचारों की प्रभावकारिता और सुरक्षा को मान्य करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान एवं नैदानिक परीक्षणों को प्रोत्साहित करके आधुनिक स्वास्थ्य देखभाल पद्धति के साथ सिद्ध पद्धतियों को एकीकृत करने के लिए पहल की है। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान परिसर में एकीकृत सिद्ध कैंसर ओपीडी कार्य कर रही है और सफदरजंग अस्पताल में सिद्ध कैंसर ओपीडी सीसीआरएस के अंतर्गत सिद्ध नैदानिक अनुसंधान एकक, सफदरजंग, नई दिल्ली के माध्यम से सिद्ध चिकित्सा पद्धति के जरिए कैंसर रोगियों की उपशामक देखभाल में सहायता कर रही है। सीसीआरएस ने कैंसर प्रबंधन, प्रजनन और शिशु देखभाल और पुनर्योजी चिकित्सा हेतु सहयोगी अनुसंधान गतिविधियां शुरू करने के लिए एम्स ऋषिकेश के

		साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।
5	केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन)	केंद्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरवाईएन) ने अनुसंधान के माध्यम से विभिन्न चिकित्सा स्थितियों में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के साक्ष्य विकसित करने के लिए एम्स तथा स्नातकोत्तर सस्थान में सेंटर फॉर माइंड एंड बॉडी इंटरवेंशन थ्रू योग (सीएमबीआईवाई) शुरू किया है।
6	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए)	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली में, एकीकृत आयुष चिकित्सा केंद्र (यूनानी, सिद्ध तथा होम्योपैथी), एकीकृत कैंसर उपचार केंद्र, एकीकृत दंत चिकित्सा केंद्र, एकीकृत क्रिटिकल देखभाल और आपातकालीन चिकित्सा केंद्र, एकीकृत अस्थि रोग केंद्र, एकीकृत आहार विज्ञान तथा पोषण केंद्र और आपातकालीन ओपीडी अनुभाग के तहत एकीकृत चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध हैं। सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में एकीकृत चिकित्सा सेवा यूनिट, एम्स झज्जर में एकीकृत चिकित्सा सेवा यूनिट और राष्ट्रीय कैंसर संस्थान-एम्स, झज्जर में एकीकृत चिकित्सा सेवा केंद्र में स्थापित अनुषंगी नैदानिक सेवा इकाइयों के माध्यम से भी एकीकृत सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, एआईआईए और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय कैंसर निवारण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईसीपीआर-आईसीएमआर) के संयुक्त उद्यम के रूप में एआईआईए, नई दिल्ली में एक एकीकृत कैंसर केन्द्र (सीआईओ) की स्थापना की गई है। एआईआईए में सेंटर फॉर इंटीग्रेटिव ऑन्कोलॉजी (सीआईओ) से आयुष जर्नल ऑफ इंटीग्रेटिव ऑन्कोलॉजी (एजेआईओ) प्रकाशित किया जा रहा है। इस संस्थान में आयुर्वेद के वैश्विक संवर्धन और अनुसंधान के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सहयोगात्मक केंद्र भी है।
7	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए)	राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) ने छः अंतःविषयक विभागों की स्थापना की है जो आयुर्वेदिक तथा आधुनिक वैज्ञानिक क्षेत्रों के विशेषज्ञों की विशेषज्ञता को शामिल करके आयुर्वेद के अभ्यास और अनुसंधान दोनों को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। इन विभागों का उद्देश्य पारंपरिक आयुर्वेदिक चिकित्सकों और समकालीन वैज्ञानिकों के बीच सहयोग को सुविधाजनक बनाना है तथा प्राचीन ज्ञान को आधुनिक पद्धतियों के साथ जोड़ने वाले अभिनव दृष्टिकोणों को प्रोत्साहित करना है। एनआईए ने एकेडमी ऑफ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च (एसीएसआईआर) के सहयोग से दोहरी पीएचडी डिग्री प्रोग्राम शुरू किए हैं। यह

		उन अनुसंधान प्रयासों में मदद देता है जो कड़ी वैज्ञानिक पद्धतियों का पालन करते हैं, पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर देते हैं, साथ ही साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान पद्धति (आईकेएस) के मूलभूत सिद्धांतों का सम्मान और संरक्षण करते हैं। यह अंतर-विषयक दृष्टिकोण न केवल उन छात्रों को परिपोषित करता है जो आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियों में निपुण हैं बल्कि उनमें आयुर्वेदिक पद्धतियों की समृद्ध विरासत की गहरी समझ भी विकसित करता है।
8	आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए)	आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के साथ एकीकृत अनुसंधान आयोजित करता है। संस्थान ने अनुसंधान एवं नवाचार हेतु सहायता देने के लिए पारंपरिक आयुर्वेद सिद्धांतों को एकीकृत करने के लिए आधुनिक विज्ञान प्रयोगशालाओं (फामाकोलॉजी, फार्मास्यूटिकल्स, माइक्रोबायोलॉजी, क्लिनिकल पैथोलॉजी और क्लिनिकल बायोकेमिस्ट्री) को भलीभांति सुसज्जित किया है।
9	राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस)	सिद्ध चिकित्सा पद्धति में एकीकृत अनुसंधान को बढ़ावा देने और चेट्टीनाड अस्पताल एवं अनुसंधान संस्थान (सीएचआरआई) में आने वाले रोगियों को सिद्ध उपचार प्रदान करने के लिए, राष्ट्रीय सिद्ध संस्थान (एनआईएस) ने चेट्टीनाड एकेडमी ऑफ रिसर्च एंड एजुकेशन (केयर) के साथ संयुक्त रूप से केलम्बक्कम में एक उन्नत सिद्ध स्पेशियल्टी ओपीडी का उद्घाटन किया। एनआईएस, एकीकृत चिकित्सा अनुसंधान केंद्र, मणिपाल एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन (एमएएचई), मणिपाल, कर्नाटक में स्पेशलिटी इंटीग्रेटिव ट्रेडिशनल सिद्ध मेडिसिन ओपीडी (एसआईएसएमओ) का आयोजन कर रहा है। इसके अलावा, एनआईएस ने कैंसर रोगियों को एकीकृत उपचार प्रदान करने के लिए सिद्ध एकीकृत कैंसर देखभाल केंद्र (एस-आईसी केयर सेंटर) शुरू किया है।